ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अग्ने रक्षाणो अंहसः। सामवेद 24
हे प्रकाश स्वरूप प्रमात्मन् ! आप पाप से हमारी रक्षा करो।
O The luminous Lord ! protect us from sins and evil deeds, save us from distress.

वर्ष 39, अंक 9 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 4 जनवरी, 2016 से रविवार 10 जनवरी, 2016
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक सम्पन्न

विश्व पुस्तक मेला प्रगति मैदान में होगा वृहद् साहित्य प्रचार

पुस्तक मेलों में अभी तक का सबसे बड़ा स्टाल आरक्षित

हिन्दी और अंग्रेजी के हॉल में होगा वैदिक साहित्य का प्रचार

सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10 रुपए में देने के लिए आर्य जनता से सहयोग की अपील

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी की अध्यक्षता में रविवार 3 जनवरी 2016 को आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली के सभागार में दोपहर 2 बजे आरंभ हुई। सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने बैठक का संचालन किया। उन्होंने गत अन्तरंग दिनांक 26 जुलाई 2015 की कार्रवाई को पढ़कर सुनाया। जिसे सर्व सम्मति से पारित किया गया। बैठक में अनेक मुद्दों को लेकर चर्चाएं हुई एवं अनेक प्रस्ताव पारित किए गए। बैठक में पारित प्रस्ताव व निर्णय अलग से बाक्स में दिए गए हैं।

महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने बताया कि इस वर्ष नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में आर्य समाज का साहित्य प्रचार स्टाल गत 13 वर्षों के उत्साह एवं सफलता को देखते हुए अभी तक का सबसे बड़ा स्टाल है। इस बार हिन्दी साहित्य के लिए 10 और अंग्रेजी साहित्य के लिए 1 स्टाल आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से आरक्षित कराए गए हैं। बैठक में सत्यार्थ प्रकाश को गत वर्षों के अनुभव के आधार पर इस बार भी केवल मात्र 10 रुपए में उपलब्ध कराने के लिए उपस्थित सदस्यों, ...शेष पेज 6 पर

दिनांक 3 जनवरी 2016 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग बैठक में लिये गये प्रमुख निर्णय

- गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम की तर्ज पर कन्या संस्कृत कुलम की दिल्ली में होगी स्थापना
- दिल्ली के आर्य अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की 16-17 अप्रैल 2016 को दो दिवसीय गोष्ठी के आयोजन का निर्णय
- 'आर्य लोग बाहर से आये थे' को पाठ्यक्रम से हटवाने की मांग के सम्बन्ध में विशेष समिति का गठन
- वर्ष 2017 फरवरी माह में दिल्ली में प्रांतीय आर्य महासम्मेलन
- सभा के बढ़ते व्यय के लिए स्थाई कोष को बढ़ाने का निर्णय
- आर्य समाजों से 'घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ' योजना को और अधिक गति देने की अपील

सत्यार्थ प्रकाश छूट पर उपलब्ध कराने के लिए सहयोग देने वाले महानुभावों की सूची पृष्ठ 3 पर प्रकाशित की गई है।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला प्रगति मैदान : 9 जनवरी से 17 जनवरी 2016

उद्घाटन : 9 जनवरी- प्रातः 11 बजे	हिन्दी साहित्य स्टाल हॉल नम्बर 12-12 ए, स्टाल नम्बर 308-317	अंग्रेजी साहित्य स्टाल हॉल नम्बर 6, स्टाल नम्बर 108	आर्यजन अधिकाधिक संख्या में आर्य समाज के साहित्य प्रचार स्टालों पर पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साह वर्धन करें -सुखबीर सिंह आर्य, संयोजक, मो. 9540012175, 9350502175
समापनः 17 जनवरी- रात्रि 8 बजे			

वैदिक विद्वान, कथाकार एवं सभा के पूर्व प्रधान ब्र. राज सिंह आर्य की स्मृति में यज्ञ सम्पन्न

'घर-घर यज्ञ- हर घर यज्ञ' योजना एवं उनके कार्यों को और गति देने की अपील

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में सभा के भूतपूर्व प्रधान ब्र.राजसिंह आर्य जी की स्मृति में रविवार 3 जनवरी 2016 को आर्य समाज 15 हनुमान रोड में सांयकाल 5 बजे यज्ञ सम्पन्न किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा डा. कर्णदेण शास्त्री थे। इस अवसर पर ब्र. राज सिंह जी के परिजनों-उनकी बहन श्रीमती शारदा आर्या एवं उनके बच्चों के साथ-साथ दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों के

अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्त्ताओं ने अपनी आहुतियां डाली। सभा महामंत्री विनय आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी समस्त आर्य समाजों से आर्य प्रतिनिधियों को दी गयी। 'घर-घर यज्ञ- हर घर यज्ञ' योजना एवं उनके कार्यों को और गति देने की अपील की। इस अवसर पर ब्र. राजसिंह आर्य जी से आशीर्वाद एवं प्रेरणा प्राप्त 'घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ' की ब्रांड एम्बेस्डर कु. नन्दनी आर्या ने कविता के माध्यम से अपने भाव प्रकट किए। 'घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ' योजना के अंतर्गत यज्ञ कराने के लिए श्री सत्य प्रकाश जी से मो. 9650183335 पर सम्पर्क करें।

पठानकोट गुस्सा, दर्द और शहादत!

भले ही केंद्र सरकार और सुरक्षा एजेंसिया कह रही हों कि पठानकोट हमला विफल हो गया लेकिन इस बात को कौन नकार सकता है कि छह आतंकियों के हमले द्वारा सात जवान शहीद हो चुके हैं और बीस जवान घायल हैं क्या इसे हम विफल साजिश कह सकते हैं? जहाँ गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने इसे पाकिस्तान की साजिश कहने में देर नहीं लगाई खुफियां विभाग ने अपनी प्रथम जाँच में साबित कर दिया कि यह हमला पाक प्रायोजित था वहां ऐसे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इतनी सहजता से यह कहकर किस प्रकार पल्ला झाड़ सकते हैं कि ''यह मानवता के दुश्मनों का हमला है।'' कुछ समय पहले तक इस प्रकार के हमले पाकिस्तान प्रायोजित होते थे और अब यह मानवता के दुश्मनों के हमले हो गए? आखिर, शब्दों में यह हेर-फेर किसलिए माननीय प्रधानमंत्री जी! इससे और क्या हासिल हो जायेगा? अब इन हमलों की निंदा नहीं, स्वाभिमान की रक्षा करो राजन!! देश के जवानों के इस बहते लहू में आत्मसम्मान की कलम डुबोकर दुश्मन के माथे पर हत्यारा लिखकर दुनिया को उसका चेहरा दिखा दो अब शांति के पथ पर कर्तव्य बोध मत भूलो राजन्! आपने जापान के प्रधानमंत्री को गीता भेंट की थी उसमें एक पंक्ति यह भी थी कि युद्ध भूमि में खड़ा अर्जुन कह रहा था, माधव मेरा गांडीव कांप रहा है, मेरे हाथों की त्वचा जल रही है, मुझसे खड़ा नही हुआ जा रहा है, मै युद्ध नहीं लडूंगा तब योगिराज कृष्ण ने कहा था 'हे अर्जुन! नादान मत बनो युद्ध करो!'

अभी पंजाब के गुरदासपुर जिले के दीनानगर थाने पर हुए आतंकी हमले के घाव भरे भी नहीं थे कि पांच महीने बाद शनिवार तड़के पठानकोट में एअरफोर्स बेस पर आतंकियों ने हमला बोल दिया पाकिस्तान सीमा से महज 20 किलोमीटर दूरी पर स्थित एअरफोर्स बेस में घुसे आतंकी भी पाकिस्तान की ही देन थे। हालाँकि पाक सरकार भले ही समूचे विश्व के सामने इस घटना की निंदा कर रही ...शेष पेज 6 पर

स्वाध्याय

हमें अपना सखित्व प्रदान करो

पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः।
सखित्वं आ वृणीमहे।। -ऋ. 9/61/4; साम. उ. 2/1/5
ऋषिः-आङ्गिरसोऽमहीयुः।। देवता-सोमः।। छन्दः- गायत्री।।

विनय- हे त्रिभुवन-पावन! तुम अपने स्पर्श से इस सब जगत् को पवित्रता दे रहे हो। यह सच है कि तुम्हारे बिना यह संसार बिल्कुल मलिन है। यह संसार तो स्वभावतः सदा मलिन ही होता रहता है, विकृत होता रहता है, गन्दगियां पैदा करता रहता है, परन्तु तुम्हारी ही नाना प्रकार की पवित्र करने वाली धाराएं नाना प्रकार से इस संसार के सब क्षेत्रों से इन मलिनताओं को निरन्तर दूर करती रहती हैं। हे पवमान! हे सब जगत् को अपने अनवरत प्रवाह से पवित्र करने वाले! जो मनुष्य तुम्हारे स्वरूप की इस पवित्रता को जानते हैं, वे अपने-आपको भी (अपने हृदय को भी) पवित्र करने में लग जाते हैं, अपने अन्तः करण से काम, क्रोध आदि विकारों को निकालकर इसे बड़े यत्न से निर्मल बनाते हैं। जब यह पवित्र हो जाता है तो इस पवित्र अन्तः करण में तुम्हारी सात्त्विक धाराएं जो आनन्द रस पहुंचाती हैं, हृदय को सदा सरस बनाये रखती हैं, उसका वर्णन वाणी से नहीं किया जा सकता। पवित्रान्तः करण भक्त लोग ही उसका अनुभव करते हैं। जिनके हृदयों में द्वेष, क्रोध, जड़ता आदि का कूड़ा भरा हुआ है उनके शुष्क हृदय, या जिन्होंने प्रेम-शक्ति का दुरुपयोग कर विषैले रसों से हृदय को गन्दा कर रखा है उनके मलिन हृदय, इस पवित्र आनन्द रस का आह्लाद क्या जानें? जब मनोविकारों का यह सूखा या गीला मैल निकल जाता है, तभी मनुष्य के हृदय में तुम्हारे पवित्र-रस का स्पन्दन होना प्रारम्भ होता है और उसमें फिर दिनों-दिन सात्त्विक रस भरता जाता है। भक्तिभाव के बढ़ने से जब भक्तों के हृदय-मानस आनन्द की हिलोरें लेने लगते हैं, तो वे देखने योग्य होते हैं। हे सोम! तब उनके पवित्र हृदय का तुम 'पवमान' के साथ सम्बन्ध जुड़ गया होता है। इस सम्बन्ध, इस सखित्व, इस एकता के कारण ही उनका हृदय सदा तुम्हारे भक्ति-रस के चुआनेवाला झरना बन जाता है। हे प्रभो! यही सम्बन्ध, अपना यही सखित्व हमें प्रदान करो। हे सोम! हम तुझसे इसी सखित्व की भिक्षा मांगते हैं। हे जगत् को पवित्र करने वाले! जिस सख्य के हो जाने से तुम्हारी पवित्रकारक धारा मनुष्य के हृदय को सदा भक्ति-रस से रसमय बनाये रखती है, उसी सखित्व की भिक्षा हमें प्रदान करो। हम अपने हृदय को पवित्र करते हुए तुमसे सही सखित्व, यही मैत्रीभाव, यही प्रेम-सम्बन्ध प्राप्त करना चाहते हैं, वरना चाहते हैं, यह वर हमें प्रदान करो।

शब्दार्थ-पवित्रं अभि उन्दतः-हमारे पवित्र हुए अन्तः करण को भक्तिरस से आर्द्र करते हुए पवमानस्य ते-तुझ परम पावन के सखित्वम्-सख्य का, मित्रभाव का वयम्-हम आवृणीमहे -वरण करते हैं।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

और मिनी को बचाओ!!

कुछ खबरें ऐसी होती हैं जो इन्सान का ध्यान अपनी ओर खींच कर बार-बार सोचने को मजबूर कर देती है। एक ऐसी ही खबर पढ़कर हृदय द्रवित हो उठा। खबर तीन हिस्सों में है एक हिस्सा प्यार, दूसरा शादी और तीसरा हत्या। आजकल बड़े पैमाने पर हो रहे प्रेम विवाह जिसे भारत का युवा आधुनिकता कहता है और विडम्बना यह है कि इस आधुनिकता के स्वांग पर माँ बाप भी मंद मुस्कान बिखेर देते हैं कि हमारे बच्चे आधुनिक हो गये। किन्तु इस आधुनिकता की आड़ में वो कहीं न कहीं खो बैठते हैं अपनी मूल संस्कृति, सभ्यता, परम्परा और रीति-रिवाज। किन्तु यहाँ हमारा एक प्रश्न जन्म लेता है कि इतना खोने के बाद आखिर हासिल कौन सी खुशी होती है? या फिर बुशरा उर्फ मिनी धनंजय के माँ बाप की तरह आंसू दर्द और वेदना मिलती है। मिनी भी आजकल की पीढ़ी की तरह यही सोचती होगी कि धर्म कुछ नहीं होता माँ-बाप बस पालने-पोसने के लिए होते हैं। बिना बॉय फ्रेंड के जीवन कुछ नहीं होता। विदेश में रहने के सपने और सपनो का राजकुमार चाहे कोई भी हो! पर मिनी को ये नहीं पता था कि जिसके लिए तू माता-पिता धर्म,संस्कृति अपना देश छोड़ना चाह रही है वो तुझे प्यार नहीं मौत देगा और हत्यारा खुद उसका प्रेमी पति आतिफ पोपेरे होगा।

आतिफ पोपेरे और मिनी उर्फ (बुशरा) की मुलाकात मुंबई के मातुंगा कॉलेज में पढ़ाई के दौरान हुई थी। उस समय बुशरा का नाम मिनी धनंजय था। शादी के बाद मिनी ने अपना नाम बदलकर पति का धर्म इस्लाम कबूल बुशरा रख लिया। दोनों के बीच 2008 में प्यार हुआ था, जिसके बाद उन्होंने शादी कर ली। 2009 में उनकी एक बच्ची भी हुई। इन संबधों से पता चलता है कि मिनी ने खुद की लाज का समर्पण शादी से पहले ही कर दिया होगा। खैर इसके कुछ समय बाद आतिफ दुबई चला गया, जहां वह एक दुकान में मैनेजर की नौकरी करने लगा। इसके दो साल बात मिनी भी आतिफ के पास दुबई चली गई। जब उनकी बच्ची तीन साल की हो गई, तो उसे रायगढ़ में रह रहे आतिफ के माता-पिता के पास भेज दिया । 2013 में मिनी के माता-पिता ने अपने बेटे निगिल से बात की, जो दुबई में ही रहता था और अपनी बहन के बारे में पता करने को कहा। जब निगिल ने पता किया तो 13 मार्च 2013 को पुलिस ने मिनी की मौत की पुष्टि की और शव पाए जाने की बात बताई। इस घटना ने मिनी के माता-पिता पर एक गहरा आघात किया जिस बेटी की जिद्द के कारण या उसकी ,खुशी के लिए वो झुक गये थे और अपनी बेटी की खुशी के लिए धर्म और समाज की सीमाएं लांघकर यहाँ तक आये थे और बदले में मासूम बेटी की मौत की सूचना मिली थी।

हालाँकि जीवन और मृत्यु सबकी निश्चित है और उसके कारण बनते हैं किन्तु एक भेड़ समाजवादी बन जान बूझकर भूखे भेड़ियों के साथ संधि कर लेना कहाँ का समाजवाद है? जैसे आधुनिक समाज में आजकल लड़के-लड़कियां अपने फैसले खुद लेना चाहते हैं मात्र कुछ फिल्मे और कुछ आधुनिक विदेशी लेखकों की पुस्तकें पढ़कर वो खुद को अनुभवी मानकर अपनी जिन्दगी के सपनों की रेलगाड़ी के लिए काल्पनिक पटरी बिछा लेते हैं और माता-पिता के सपने पुराने खटारा होने का दावा करते हैं किन्तु भूल जाते हैं काल्पनिक पटरी पर यथार्थ का जीवन नहीं चलता और मिनी की तरह दुर्घटना का शिकार होना पड़ता है।

यह एक मिनी की कहानी नहीं है। ना जाने हर रोज कितनी मिनी इस प्यार का शिकार हो रही हैं पर यह भूल जाती हैं कि इन आतिफों के सामने प्यार से पहले अपनी किताब की आयत होती है जिसमें लिखा है। औरत तुम्हारी खेती है, उसका शोषण करना तुम्हारा हक है, वो सिर्फ बच्चे पैदा करने की मशीन होती है। बहरहाल जो भी हुआ दुःख मनाए जाने के सिवा सिर्फ एक रास्ता है कि अपने बच्चों को आजादी दें किन्तु साथ में अच्छे संस्कार और संस्कृति भी दें ताकि और मिनी मरने से बच जायें। ***-सम्पादक***

ग्रन्थ परिचय

गौतम-अहल्या और इन्द्र-वृत्रासुर की सत्यकथा

प्रश्न : 1 यह तो कोई पौराणिक ग्रन्थ प्रतीत होता है?

उत्तरः हां, गौतम और अहल्या से सम्बन्धित कथा का वर्णन पुराणों में भी मिलता है, जो अत्यन्त बीभत्स रूप में है। वास्तव में मूल रूप से यह कथा ब्राह्मण-ग्रंथो में मिलती है, जो आलंकारिक रूप में है।

प्रश्नः 2 ब्राह्मण ग्रन्थों में यह कथा किस नाम से निर्दिष्ट है?

उत्तरः 'गौतम अहल्या और इन्द्र वृत्रासुर' नाम से यह कथा आलंकारिक रूप में ब्राह्मण ग्रन्थों में है।

प्रश्न 3: महर्षि ने गौतम, अहल्या आदि पुरुषवाची नामों को किस रूप में लिया है?

उत्तरः महर्षि ने वर्णन किया है कि ब्राह्मण ग्रन्थों में गौतम चन्द्रमा का, अहल्या रात्रि का, इन्द्र सूर्य का तथा वृत्र मेघ (बादलों) का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रश्न 4 : क्या इस घटना को महर्षि ने स्वतन्त्र ग्रन्थ के रूप में ही लिखा है?

उत्तरः वास्तव में ये दो घटनाएं हैं-गौतम और अहल्या की तथा इन्द्र और वृत्रासुर की। इन दोनों घटनाओं के वास्तविक स्वरूप का दर्शन महर्षि ने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के 'ग्रन्थ प्रामाण्याप्रामाण्य प्रकरण' में एवं मार्गशीर्ष शुदी 15 संवत् 1933 को वेदभाष्य के विषय में छपवाये गये विज्ञापन में भी करवाया है। हो सकता है, इस विज्ञापन को ही स्वतंत्र पुस्तक मान लिया गया हो, अथवा कोई स्वतन्त्र पुस्तक भी हो, यह निश्चित नहीं हो पा रहा।

प्रश्न 6. इस पुस्तक का क्या कहीं उल्लेख मिलता है?

उत्तरः हां, इस पुस्तक का दो-तीन स्थानों पर उल्लेख मिलता है:-

1) संवत् 1937, चैत्र में प्रकाशित 'गोकरुणानिधि' को अन्तिम पृष्ठ पर, दो पैसे मूल्य के साथ इसका सबसे पहले उल्लेख मिलता है।

2) संवत् 1937, आषाढ़ में यजुर्वेद भाष्य के 15वें अंक के अन्त में छपे विज्ञापन में। एवं

3) काशी शास्त्रार्थ (संवत् 1937) और सत्यधर्म विचार (सं. 1937), ग्रन्थों में छपे पुस्तकों के विज्ञापन में भी इसका उल्लेख है। यहां इस पुस्तक का मूल्य एक आना लिखा हुआ है।

4) महर्षि के वि. संवत् 1939, भाद्रपद बदी 1, मंगलवार के दिन लिखे पत्र में इस पुस्तक की 25 प्रतियां प्राप्त करने पर उल्लेख है। (यह पत्र 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन'-भाग-2; पृष्ठ 609-610 पर छपा है)

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

-मो. 09540040339

सुख शान्ति का महास्रोत 'यज्ञ'

आचार्य अखिलेश्वर,
हरिद्वार

अग्निहोत्र से लेकर संसार में जितने भी श्रेष्ठ कर्म हैं उन सभी को अगर एक शब्द में कहना हो तो वह शब्द है 'यज्ञ'। विधाता की सृष्टि में जहां कहीं भी प्राणियों का अस्तित्व है वहां प्रभु का जीवन यज्ञ अविकल रूप से चल रहा है। मानवेत्तर प्राणी उस यज्ञ का किंचित भी उल्लंघन नहीं करते। परन्तु प्रभु की सर्वोत्तम रचना मानव को कुछ ऐसी छूट प्राप्त है कि वह स्व-इच्छा से निज जीवन को उत्कृष्ट अथवा निकृष्ट बना सकता है। अतएव प्रभु ने वेदों का उपदेश करके मानव के लिए कर्त्तव्य का बोध दिया है। उपलब्ध इतिहास के अनुसार सत्य-त्रेता-द्वापर तथा कलयुग के कुछ समय तक मानव समाज नित्य अग्निहोत्र आदि करके प्रभु के सृष्टि यज्ञ से जुड़ा रहा। यज्ञ उसके लिए दैनिक चर्या के रूप में था। जैसे खाना, पीना, सोना, इत्यादि क्रियायें दैनिक हैं वैसे नित्य अग्निहोत्र भी होता था।

यज्ञ का जीवन में कितना व्यापक प्रभाव होता है इसको हर आदमी जान नहीं सकता। अन्य श्रेष्ठ कार्य नित्य सम्भव नहीं हैं, इतनी शक्ति भी सबको प्राप्त नहीं है। परन्तु छोटा सा अग्निहोत्र अगर रोज होता रहे तो व्यक्ति अनायास ही प्रभु के सृष्टि योग से जुड़ा रहता है। परिणामत: उसे सृष्टि से जो भी अपेक्षायें हैं वे पूर्ण होती रहती हैं। स्वास्थ्य, सन्तान, समृद्धि, यश, स्नेह एवं सेवा आदि सौभाग्य किसको नहीं चाहिए? उस प्राचीन विश्वास को, जिसमें यज्ञ से ये सौभाग्य प्राप्त होना माना जाता था, अब भुला दिया गया है। सुख शान्ति की तलाश में मनुष्य ने पिछले कुछ वर्षों में प्रकृति के साथ जो ज्यादतियां की हैं उनके भयंकर परिणाम हमारे सामने आ रहे हैं।

यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया होते हुए भी उसे धर्म, और श्रद्धा के साथ इसलिए जोड़ दिया गया था कि जन साधारण, जो गहरी समझ नहीं रखते, वे भी श्रद्धा से यज्ञ करते रहे। जैसे दूध के गुणों को न जानने वाला भी अगर दूध पियेगा तो उसे उतनी ही पुष्टि प्राप्त होगी जितनी जानकार को होती है इसी प्रकार यज्ञ अज्ञानी को भी अवश्य लाभान्वित करता है।

धार्मिक आस्था से हटकर केवल भौतिक लाभ की नज़र से देखें तो भी यज्ञ के अनगिनत लाभ हैं। इस समय पर्यावरण की समस्या से सम्पूर्ण विश्व चिन्तित है। दुनिया भर के बुद्धिजीवी, वैज्ञानिक एक स्वर से यह घोषणा कर रहे हैं कि अगर इसी प्रकार प्रदूषण बढ़ता गया तो आने वाले समय में प्रत्येक व्यक्ति को ऑक्सीजन का सिलेण्डर साथ लेकर चलना पड़ेगा। महानगरों एवं कारखानों के इलाके का वातावरण तो आज भी इतना विषाक्त है कि वहां के लोग नित नय रोगों के शिकार हो रहे हैं।

यज्ञ पर हो रहे प्रयोगों से अब यह स्पष्ट हो चुका है कि शुद्ध घी एवं जड़ी बूटियों की आहूतियों से वातावरण को बहुत जल्दी शुद्ध किया जा सकता है। अगर हर घर में प्रतिदिन 15-20 मिनट भी अग्निहोत्र होना शुरू हो जाये तो सम्पूर्ण इलाके में फैला प्रदूषण ध्वस्त हो जाये। वनस्पतियां शीघ्र बढ़ेंगी। पशु-पक्षियों की प्रजातियां नष्ट नहीं होंगी। प्राचीन काल में लोगों के दीर्घजीवी, बुद्धिजीवी, बुद्धिमान, धार्मिक एवं सुखी होने का कारण ही दैनिक यज्ञ कर्म था। विधिवत् यज्ञ करने वाले व्यक्ति के सम्पूर्ण क्रिया कलाप सुव्यवस्थित एवं दिव्य हो जाते हैं।

महर्षि मनु का यह श्लोक इस बात का उदाहरण है कि प्रतिदिन दो समय का अग्निहोत्र सबके लिए आम बात थी; तभी दो समय के यज्ञ से दो समय ही भोजन करने की उपमा दी है।

प्रात: सायं मनुष्याणामशनं श्रुति चोदितम।

नान्तरा भोजन कुर्यात् अग्निहोत्रसमो विधि:।।

श्रुति ने मनुष्यों को दिन में दो ही समय (सुबह शाम) भोजन करने का विधान किया है। बीच में कुछ भी नहीं खाना चाहिए। क्योंकि ये अग्निहोत्र की तरह ही है। जैसे अग्निहोत्र दो बार होता है वेसे भोजन भी दो ही बार होना चाहिए।

अग्निहोत्र का नियत समय और नियम व्यक्ति को तपस्वी बना देता है। यज्ञ में होने वाली क्रियायें, मन्त्रोच्चारण तथा समर्पण से व्यक्ति सात्विक एवं विनम्र बनता जाता है। ज्ञान में वृद्धि होती है। शरीर पर रोग के परमाणु का प्रभाव नहीं होता। घर एवं आस-पास का वातावरण परम निर्मल हो जाता है। खांसी जुखाम से लेकर जोड़ों के दर्द, बांझपन, नपुंसकता आदि अनेक रोगों का इलाज यज्ञ से होता है। कम सुनना, तुतलापन, गूंगापन एवं श्वास सम्बन्धी अनेक रोग यज्ञ से ठीक होते पाये गये हैं।

यज्ञ से पारिवारिक तनाव भी शीघ्र दूर होते हैं, क्योंकि यज्ञ की सुगन्ध व वेदमन्त्रों की ध्वनि में ऐसा चमत्कार है कि वह व्यक्ति के तमोगुण एवं रजोगुण को एकदम ध्वस्त कर देता है और सतोगुण की शक्ति को बढ़ा देता है। सभी झगड़े, मनमुटाव एवं तनाव का मुख्य कारण सतोगुण का कमजोर पड़ना है।

अध्यापक, जज, वकील, डॉक्टर और नेतागण जो समाज के भविष्य का निर्माण करते हैं, वे अगर नित्य यज्ञ करें तो उनकी बुद्धि की निर्मलता से सारे राष्ट्र का नक्शा ही बदल जाये। जैसे दूषित वातावरण के कारण लोगों के स्वास्थ्य प्रभावित हो रहे हैं उससे भी ज्यादा तामसिक एवं रजोगुणी बुद्धि के कारण मानव के समस्त क्रिया कलाप पाप पूर्ण हो गये हैं। केवल यज्ञ में ही ऐसा सामर्थ्य है कि वह बाहर के वातावरण को और भीतर के मानव-स्वभाव को पवित्र करता है।

दैहिक, दैविक, भौतिक तीनों त्रासों से मुक्ति पाने का एकमात्र तरीका यज्ञ है। भूकम्प, समुद्री तूफान, अकाल, बाढ़ आदि प्राकृतिक विपदायें भी यज्ञ से टल सकती हैं। यज्ञ के लाभ असंख्य हैं। इसे तो करके ही अनुभव किया जा सकता है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व को सुखमय, शान्त और महान बनाने का एकमात्र तरीका है यज्ञ। प्रभु सबको सुमति दें ताकि सभी यज्ञ रूप प्रभु की शरण में आकर अपना जीवन दिव्य बना सकें।

यज्ञ से होने वाले लाभों को सभी तक पहुंचाने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने 'घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ योजना का शुभारम्भ किया हुआ है। जिसमें सभा द्वारा नियुक्त पुरोहित श्री सत्य प्रकाश जी घर-घर जाकर यज्ञ कार्य सम्पन्न कराते हैं । इस यज्ञ को सम्पन्न कराने का सम्पूर्ण व्यय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा वहन करती है। क्यों न आप भी आज ही इस महाकार्य के सहभागी बने। यज्ञ कराने के लिए श्री सत्य प्रकाश जी से मो. 9650183335 पर सम्पर्क करें।

> ...यज्ञ में होने वाली क्रियायें, मन्त्रोच्चारण तथा समर्पण से व्यक्ति सात्विक एवं विनम्र बनता जाता है। ज्ञान में वृद्धि होती है। शरीर पर रोग के परमाणु का प्रभाव नहीं होता। घर एवं आस-पास का वातावरण परम निर्मल हो जाता है। खांसी जुखाम से लेकर जोड़ों के दर्द आदि अनेक रोगों का इलाज यज्ञ से होता है। कम सुनना, तुतलापन, गूंगापन एवं श्वास सम्बन्धी अनेक रोग यज्ञ से ठीक होते पाये गये हैं। यज्ञ से पारिवारिक तनाव शीघ्र दूर होते हैं, क्योंकि यज्ञ की सुगन्ध व वेदमन्त्रों की ध्वनि में ऐसा चमत्कार है कि वह व्यक्ति के तमोगुण एवं रजोगुण को एकदम ध्वस्त कर सतोगुण की शक्ति को बढ़ा देता है। ....
>
> **'घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ योजना'**
>
> यज्ञ से होने वाले लाभों को सभी तक पहुंचाने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने 'घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ' योजना का शुभारम्भ किया हुआ है। जिसमें सभा द्वारा नियुक्त पुरोहित श्री सत्य प्रकाश जी घर-घर जाकर यज्ञ कार्य सम्पन्न कराते हैं । इस यज्ञ को सम्पन्न कराने का सम्पूर्ण व्यय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा वहन करती है। क्यों न आप भी आज ही इस महाकार्य के सहभागी बने। यज्ञ कराने के लिए श्री सत्य प्रकाश जी से मो. 9650183335 पर सम्पर्क करें।
>
> **-सम्पादक**

विश्व पुस्तक मेला - 2016

सत्यार्थ प्रकाश में छूट देने हेतु दान देने वालों की सूची

1.	आर्य समाज जनकपुरी सी-3	20,000
2.	आर्य समाज डी ब्लाक विकासपुरी	11,000
3.	आर्य समाज न्यू मोती नगर	11,000
4.	आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1	11,000
5.	आर्य समाज ए ब्लाक जनकपुरी	5,000
6.	दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल	20,000
7.	आर्य समाज कीर्ति नगर	5,100
8.	श्री ईश नारंग	5,100
9.	आर्य समाज सुन्दर विहार	11,000
10.	आर्य समाज गोविन्दपुरी	5,100
11.	आर्य समाज नजफगढ़	10,000
12.	आर्य समाज शाहबाद मुहम्मदपुर	2,100
13.	श्री धर्मेन्द आर्य	1,100
14.	डॉ. मुकेश कुमार	1,100
15.	आर्य समाज राजनगर-2 पालम कालोनी	2,100
16.	श्री रामपाल पांचाल	5,000
17.	श्री अशोक गुप्ता	10,000
18.	आर्य समाज दरियागंज	5,000
19.	आर्य समाज रोहतास नगर	11,000
20.	आर्य समाज हनुमान रोड	20,000
21.	आर्य समाज मानसरोवर पार्क	2,100
22.	श्री जगदीश प्रसाद शर्मा	2,000
23.	श्री प्रेम अरोड़ा जी	6,000
24.	श्री सतपाल भरारा, चेयरमैन, म.द.ज.क.ट्रस्ट	5,100
25.	आर्य समाज कृष्ण नगर	5,100
26.	आर्य समाज मॉडल बस्ती, शीदीपुरा	5,100

क्रमश:

इस मद में प्राप्त होने वाले सहयोग की सूची इसी प्रकार आर्य संदेश के आगामी अंकों में प्रकाशित की जाती रहेगी। आप भी अपने परिवार आर्य समाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जन साधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेज कर सहयोग कर सकते हैं। आप अपनी दान राशि सीधे सभा के बैंक **अकाउंट नम्बर 0133002100005251 पंजाब नैशनल बैंक, IFS code: PUNB 0013300 MICR No. : 110024092** में भी जमा कर सकते हैं। कृपया राशि जमा कराने के उपरांत श्री संदीप आर्य (9650183339) को अवश्य सूचित करें ताकि रसीद भेजी जा सके। **सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अंतर्गत आयकर मुक्त है।** **-महामंत्री**

पुण्य स्मृति (5 जनवरी) पर विशेष

युवाओं के प्रेरणा स्रोत्र ब्र. राज सिंह आर्य

प्रेरणाप्रद कार्यों का संक्षिप्त दिग्दर्शन

हरियाणा प्रान्त के झज्जर जिला अन्तर्गत ग्राम आसौदा में श्री रणजीत सिंह एवं माता श्रीमती चन्द्रवती जी के परिवार में 16 सितम्बर 1953 को ब्र. राजसिंह आर्य जी का जन्म हुआ। माता चन्द्रवती जी ने 5 पुत्रों व 4 पुत्रियों में तीसरे नम्बर पर पुत्र राज सिंह को जन्म दिया था। राज सिंह जी ने आर्य संस्कार अपनी ननिहाल से प्राप्त किये। युवावस्था में आप दिल्ली में श्री धर्मपाल आर्य जी के पूज्य पिता लाला दीपचन्द आर्य जी के सम्पर्क में आये जिन्होंने आपको आर्य समाज के प्रति विशेष प्रेरणा दी। तदुपरान्त स्वामी सत्यपति जी के सम्पर्क में आने के पश्चात् राज सिंह जी की रुचि आर्य समाज के प्रति गहरी होती चली गयी। आपने युवावस्था में ही ब्रह्मचर्यव्रत का संकल्प ले लिया था और युवाओं के बीच आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करने के लिए सक्रिय हो गये थे। आर्य वीरदल के सम्पर्क में आने के पश्चात् आपने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज को समर्पित कर दिया था। राज सिंह जी का जीवन आर्य समाज के प्रति सदैव संघर्षमय रहा। आपने अपने जीवन में निम्न प्रेरणाप्रद कार्य किये जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता-

-19 वर्ष की आयु में शराब बंदी आन्दोलन किया और चार दिन तक दिल्ली के तिहाड़ जेल में रहे।

- युवाओं को सामाजिक कुरीतियों से दूर करने के लिए 'युवक परिषद' बनाई जिसमें नवयुवकों को व्यसनों से मुक्त करने हेतु जन जागरण एवं अनेकों शिविरों के माध्यम से भारतीय संस्कृति की महानता हेतु युवकों को प्रेरणा प्रदान करने के कार्य किये

- दिल्ली से एटा, मैनपुरी तक साईकिल रैली द्वारा गांव-गांव में नशामुक्ति, जुआ, मांस भक्षण के साथ-साथ अंधविश्वास के विरुद्ध जन-जागरण एवं जन आन्दोलन किया।

- 1976 में आपातकाल में (जब सभी सामाजिक संस्थाएं बंद हो गयी थीं), जनता के हितों के लिए एक संघर्ष समिति बनाई जिसका नाम 'श्री नव आदर्श जनहित संघ' रखा इसके माध्यम से निर्धन एवं कमजोर वर्ग के लोगों को कार्य करने हेतु अनेक प्रकार की सहायता दी जाने लगी। विधवाओं को काम करने हेतु सिलाई मशीनें, बच्चों को स्कूली पुस्तकें और ड्रेस, अनेक गरीब बच्चों को शादी हेतु सहायता दी जाने लगी। ये संगठन अब तक विधिवत क्रियाशील है।

- एक संस्था 'श्री सत्य सनातन वेद मंदिर समिति' के नाम से बनाई, इसमें नि:सन्तान वृद्धों की सम्पूर्ण देखभाल की नि:शुल्क व्यवस्था करने का निश्चय किया गया।

- आपने संस्कार विहीन गृहस्थों के लिए एक पाठ्यक्रम बनाया जिससे सन्तानों को आदर्श व संस्कारवान् बनाया जा सके।

- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में लम्बे समय तक सीनेटर के रूप में सेवा प्रदान की।

- आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य में प्रतिष्ठित सदस्य रहे।

- आर्य समाज आर्यपुरा सब्जीमंडी दिल्ली में मंत्री पद पर रहे।

- महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण शताब्दी वर्ष 1983 अजमेर, जिसमें विश्व के पांच लाख महानुभावों की भागीदारी थी, हेतु स्वयं सेवकों की व्यवस्था का दायित्व सम्भाला और दिल्ली से 1000 युवक-युवतियों को स्पेशल ट्रेन से अजमेर महासम्मेलन में पहुंचाया।

- महर्षि दयानन्द जी के शताब्दी समारोह 'अजमेर महासम्मेलन' की सारी व्यवस्था संभाली एवं युवा सम्मेलन के संयोजक बने व सम्मेलन में लाखों युवाओं को सम्बोधित किया।

- राम मंदिर आन्दोलन में 70 युवकों के साथ बी.एल. शर्मा के नेतृत्व में 1400 लोगों सहित गिरफ्तारी दी। माछरा जेल में चार दिन रहे तथा वहां पर विशाल यज्ञ करके सभी को श्री राम के आदर्शों पर जीवन भर चलने की प्रेरणा दी।

- 1984 सिखों पर हुए अमानवीय अत्याचार परअनेक सिख भाईयों को सुरक्षा सेवा प्रदान की।

- 1985 में मुम्बई जाकर फिल्म के माध्यम से अधिकतम लोगों तक आर्य समाज का प्रचार करने हेतु एक फिल्म 'अनोखा इन्सान' का निर्माण किया।

- जे.पी. आन्दोलन में उत्साह पूर्वक भाग लिया।

- 1990 में पुन: दिल्ली आकार माता की सेवा के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में जुट गये और आत्मशक्ति बढ़ाने के लिए 61 दिन तक जंगल में कुटिया बनाकर अदर्शन मौन एवं उपवास करके गायत्री की साधना की। जिससे अदम्य आत्मशक्ति प्राप्त हुई।

-1993 में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के महामंत्री का दायित्व सम्भाला। महामंत्री का पदभार प्राप्त होते ही सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया और अनेक प्रान्तों में आर्य वीरदल की स्थापना कर नौजवानों में समाज के प्रति रुचि जागृत की। इसके लिए अनेक बार जुलूस निकालकर जन जागरण किया तथा सैकड़ों व हजारों युवकों के शिविर आयोजित कर शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति व विकास हेतु नवचेतना जागृत की।

- 1998 में विश्व स्तर पर युवाओं को जोड़ने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन दिल्ली के बुराड़ी मैदान में आयोजित किया। जिसमें नौ देशों एवं भारत के लगभग सभी प्रान्तों के लगभग 60 हजार लोगों ने अपनी भागीदारी दर्ज कराई। इस सम्मेलन में तत्कालीन मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा जो आपके अनन्य मित्रों में से एक थे उनका विशेष योगदान रहा।

- पुन: अंतरात्मा की आवाज से दो महीने गंगोत्री के सघन जंगलों की गुफा में रहकर साधना की।

- 2003 में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित हुए। आपको सभा के माध्यम से भारत और विश्व के अनेक देशों में प्रचार-प्रसार करने का अवसर मिला। आर्य जगत् के अनेक आन्दोलनों, सम्मेलनों एवं अनेकों सामाजिक कार्यों द्वारा जनचेतना उत्पन्न की।

- 2006 में दिल्ली के जापानी पार्क में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन करवाया जिसमें 21 देशों के गणमान्य व्यक्तियों ने शिरकत की व सम्मेलन में लगभग डेढ़ लाख लोगों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

- 2007 में शिकागों अमेरिका सम्मेलन में भाग लिया।

- 2008 में मॉरीशस आर्य महासम्मेलन में पहुंचे।

- 2009 में सूरीनाम साऊथ अमेरिका महासम्मेलन में शिरकत की।

- 2010 में हॉलैण्ड(नीदरलैण्ड) यूरोप सम्मेलन में पहुंचे।

-2011 में रूस तथा आर्मिनिया के युवाओं को प्रेरित करके आर्य समाज की स्थापना करवाई।

- 2012 में पुन: एक और अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन दिल्ली के जापानी पार्क में आपके संयोजकत्व में आयोजित किया गया। जिसमें 31 देशों सहित लगभग 3 लाख लोगों की भागीदारी हुई यह सम्मेलन एक ऐतिहासिक सम्मेलन सिद्ध हुआ।

- 2013 में साऊथ अफ्रीका डरबन सम्मेलन में भाग लिया।

- 2014 में सिंगापुर तथा बैंकाक (थाईलैण्ड) सम्मेलन में शामिल हुए।

- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में12 वर्षों तक लगातार प्रधान पद को सुशोभित किया।

- दिल्ली में 40 स्कूलों की आर्य विद्या परिषद् के 12 वर्षों तक प्रधानपद पर सेवारत् रहे।

- गुरुकुलों द्वारा भारतीय संस्कृति, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली तथा संस्कृत शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अनेक गुरुकुलों में सक्रिय भूमिका निभाई।

आर्य युवाओं के भीतर नव चेतना का संचार करने वाले आर्यवीर -ब्र. राज सिंह आर्य जी 5 जनवरी 2015 की सुबह हृदय की तीव्र वेदना के कारण अचानक हम सबको छोड़कर हमेशा-हमेशा के लिए चले गये और हम सबको प्रेरित कर गये कि आओ हम सब मिलकर महर्षि दयानन्द जी के नाम को विश्व के बच्चे-बच्चे के मन में रोपित करें जिससे देश का बच्चा-बच्चा शान से कह सके कि हम आर्य हैं।

मैं आर्य समाजी कैसे बनी

जो महानुभाव किसी के प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बने उनके लिए आर्य संदेश में एक नया स्तंभ 'मैं आर्य समाजी कैसे बना' प्रारंभ किया गया है। आप भी अपने प्रेरक प्रसंग इस स्तम्भ हेतु अपने फोटो के साथ डाक-'आर्य संदेश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' अथवा ईमेल aryasabha@yahoo.com द्वारा हमें भेज सकते हैं। आर्य संदेश के आगामी अंकों में इसे निरंतर प्रकाशित किया जाता रहेगा। -संपादक

मैं उस समय बारहवीं कक्षा में पढ़ती थी हमारे पडोस में कभी कथा पाठ, कभी हनुमान का रौट, कभी कीर्तन भजन होते रहते थे। मेरी माँ हमेशा मुझे जबरदस्ती उसमें भेजती शायद मां को डर था कहीं मैं अधार्मिक ना रह जाऊं एक दिन मैं माँ के साथ सत्संग में गयी तो एक पौराणिक पंडित कथा सुना रहे थे और कथा में नारी की आलोचना कर रहे थे वह कह रहे थे हमारे शास्त्रों में लिखा है-''नारी नरक का द्वार है'' मैने पूछा किसने कहा आपसे नारी नरक का द्वार है।

उन्होंने कहा- ऋषि-मुनियों ने लिखा है स्त्री नरक का द्वार है। अनुभव से ही लिखा होगा। अचानक गली से गुजरता आर्य समाज से जुड़ा व्यक्ति बोला कौन सा ऋषि मुनि था जो नरक में गया और आकर बताया कि नरक का द्वार नारी जैसा है? यदि आपके अनुसार वो ऋषि मुनि था तो शायद ऋषि मुनि तो स्वर्ग में जाते होंगे या वो भी नरक में जाते हैं।

वहां पर उपस्थित सब स्त्रियाँ हँसने लगी पौराणिक कथावाचक का मुंह देखने लायक था किन्तु मेरे मन में आर्य समाज के लिए जगह बन गयी किन्तु माँ अक्सर कहती थी ये जो आर्य समाजी होते हैं ये भगवान् को नहीं मानते पर आज मुझे लगा जीवन और धर्म को आर्य समाज के बिना नहीं समझा जा सकता।

मैंने उन आर्य समाजी व्यक्ति को बाबा कहकर पूछा फिर यह स्वर्ग नरक कहाँ से बने उन्होंने सहज भाव से जो उत्तर दिया वह मुझे आज भी याद हैं-

उन्होंने कहा, ''यह इन लोगों के काल्पनिक स्थान हैं, इन लोगों ने इसी जिंदगी में नरक देख लिया है। स्त्री को दबाया तो उसने नरक खड़ा कर दिया है। यदि स्त्री पुरुष को दबाए तो पुरुष नरक का द्वार हो जाएगा। सहज हो जाओ, स्वाभाविक हो जाओ, समाज के परोपकार के लिए जीवन जीयो। प्रकृति के अनुकूल, सब अर्थों में। अपने को जबर्दस्ती सता कर स्वर्ग न ले जा सकोगे। परमात्मा आत्म हिंसकों को सम्मान नहीं दे सकता। कम से कम परमात्मा ने तुम्हें जो जीवन दिया है उसका सम्मान करो। इस जीवन में थी तो परमात्मा छिपा है और उसे वेदानुसार जानो।''

आर्य समाजी बाबा जी की बात सुनने के बाद मैंने सत्यार्थ प्रकाश खरीदा और उसका अध्ययन किया। जिससे मुझे एक नई प्रेरणा प्राप्त हुई कि पंडित जी जो बोल रहे थे वह सब मिथ्या है धर्म की वास्तविकता कुछ और ही है जो सत्यार्थ प्रकाश में लिखित है। आज इस बात को 15 वर्ष बीत गये मैं अपने घर परिवार में खुश हूँ और मुझे यह कहते हुए बड़ा गर्व होता है कि मैं आर्य समाज से जुड़ी हूँ

सिन्धु पंवार, मुजफ्फनगर

ओ३म्

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।। वेद ।।
(मनुष्य सत्कर्मों को करता हुआ सौ - वर्ष पर्यन्त जीने की इच्छा करें)

स्व. लाला दीपचन्द आर्य

उनका आदर्श जीवन और ऋषि भक्ति
सदा हमारा पथ प्रदर्शन करते रहें...

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, गली मन्दिर वाली, नया बांस, दिल्ली - 110006

के संचालक, 28 दिसम्बर 2015 को
उनकी 35वीं पुण्य तिथि पर
उन्हें कर्त्तव्यनिष्ठ एवम् श्रद्धामय भाव से आज भी स्मरण करते हैं।

आर्ष कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद का द्वितीय दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद के तत्वावधान में 30 अक्टूबर से 1 नवम्बर 2015 के मध्य गुरुकुल का द्वितीय दीक्षान्त समारोह सम्पन्न हुआ। गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व कुलपति आचार्य वेदप्रकाश, डॉ. भारत भूषण एवं वैदिक विद्वान स्वामी वेदानन्द सरस्वती जी उत्तरकाशी के करकमलों द्वारा उपाधि वितरण किया गया। इस अवसर पर इन महानुभावों ने संस्कृत एवं हिन्दी भाषा में अपने उद्बोधन दिये। समारोह में आर्य संस्कृति सम्मेलन व नारी सम्मेलन का आयोजन किया गया तथा बालिकाओं द्वारा ताईकांडो एवं जूडो कराटे का प्रदर्शन किया गया। **-प्रियंवदा वेदभारती**

वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास द्वारा प्रतियोगिता आयोजित

आर्य समाज खेड़ा अफगान व वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में लगभग 25 विद्यालयों के 700 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में विजयी सभी विद्यार्थियों को नकद राशि तथा वैदिक साहित्य प्रदान किया गया। परीक्षा पास करने वाले विद्यार्थियों को सान्त्वना पुरस्कार में साहित्य प्रदान किया। इस अवसर पर उपस्थित सभी अध्यापकों को भी वैदिक साहित्य भेंट किया गया।

-सचिव, वेद भूषण गुप्त

ओ३म्

आर्य पर्वों की सूची : विक्रमी सम्वत् 2072-73 तद्नुसार सन् 2016

क्र. सं.		पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिन
1.		लोहड़ी	पौष शुक्ल, 4 वि. 2072	13/01/2016	बुधवार
2.		मकर-संक्रान्ति	पौष शुक्ल, 5 वि. 2072	14/01/2016	गुरुवार
3.		गणतन्त्र दिवस	माघ कृष्ण, 2 वि. 2072	26/01/2016	मंगलवार
4.		वसन्त-पंचमी	माघ शुक्ल, 5 वि. 2072	12/02/2016	शुक्रवार
5.		सीताष्टमी	फाल्गुन कृष्ण, 8 वि.2072	2/03/2016	बुधवार
6.	ऋषि-पर्व	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन कृष्ण,10 वि.2072	4/03/2016	शुक्रवार
7.	ज्योति-पर्व	शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव)	फाल्गुन कृष्ण, 13 वि.2072	7/03/2016	सोमवार
8.	वीर-पर्व	पं.लेखराम बलिदान दिवस	फाल्गुन शुक्ल, 3 वि. 2072	11/03/2016	शुक्रवार
9.	मिलन-पर्व	नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन पूर्णिमा, वि. 2072	23/03/2016	बुधवार
10.		आर्य समाज स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/नवसम्वत्सर/ उगाड़ी/गुड़ी पड़वा/ चैती चांद	चैत्र शुल्क, 1 वि.2073	8/04/2016	शुक्रवार
11.		रामनवमी	चैत्र शुक्ल, 9 वि. 2073	15/04/2016	शुक्रवार
12.		वैशाखी	चैत्र शुक्ल, 7 वि. 2073	13/04/2016	बुधवार
13		पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	बैशाख कृष्ण 4 वि.2073	26/04/2016	मंगलवार
14.		हरितृतीया(हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, 3 वि.2073	5/08/2016	शुक्रवार
15.	वेद-प्रचार समारोह	श्रावणी उपाकर्म-रक्षा बन्धन/ हैदराबाद सत्याग्रह दिवस	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2073 श्रावण पूर्णिमा, वि. 2073	18/08/2016	गुरुवार
16		श्री कृष्णजन्माष्टमी	भाद्रपद कृष्ण, 8 वि. 2073	25/08/2016	गुरुवार
17.		विजय दशमी/दशहरा	आश्विन शुक्ल, 10 वि.2073	11/10/2016	मंगलवार
18.		स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन शुक्ल, 12, वि. 2073	13/10/2016	गुरुवार
19.	क्षमा-पर्व	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या, वि. 2073	30/10/2016	रविवार
20.	बलिदान-पर्व	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष कृष्ण 10, वि. 2073	23/12/2016	शुक्रवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।
- विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

खेद प्रकाश

आर्य संदेश अंक 8 पृष्ठ 8 पर 'आर्य पर्वो की सूची' के स्थान पर 'आर्य समाज अवकाश सूची' प्रकाशित हो गयी है जिसका हमें खेद है। **-सम्पादक**

Continue from last issue

Glimpses of the Rig Veda

Right living-the True Wealth of Life

"Ye men, you earn all other wealth within the span of your life-wealth. You can, by efforts, regain the lost riches and power, but never get back the part of life you have spent. May every moment of your life be a step upwards to reach the height of bliss."

"Ye men, I Draw a life-map for you. Surely a mortal is not to live for ever, but he possesses ability to live with spirit and vigour. May your desire for material wealth and enjoyments be well-regulated by righteousness. May your efforts centre round the liberation of your soul."

'Ye men, may you live a hundred autumns purposefully and actively engaged in your duties. May you be protected from malignant adversaries coming from behind, from above and from below and from all directions. Free from sin, may your life be ling and delightful. A laggard is dead while living. Keep, therefore, away from the signs of death. May you never fall a victim to immature deatha. May your death be hidden behind the wedge."

इमं जीवेभ्य: परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम्।

शतं जीवन्तु शरद: पुरूचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन।। (Rv.x.18.4)

Imam Jivebhayah paridhim dadhami masam nu gad aparo artham etam.

satam Jivantu saradah purucirantar mrtyum dadhatam parvatena..

Cross the river of life with courage and good company.

The world is like a torrential stream of mountainous region where its bed is stony and steep. The velocity of water is enormous. It is always perilous for a lone traveller to cross over the stream. When he carries heavy luggage, it is all the more difficult and risky. In such a situation, a few co-travellers join together hand in hand walking cautiously on the slippery river-bed taking with them the bare minimum luggage. Likewise is the life of a mortal full of challenges.

Says the verse, "Ye men, be alert, rise up, keep good company to carry on your duties. Remember, the worldly life is crooked. Shun the burden of excitements like greed, lust and other impulses in your passage of life."

The vedic verse is reflected in Upanishadic texts as follows: 'Arise, awake and learn by approaching the enlightened ones. The wise ones describe that path to be as impassable as a rozor's edge, wich when sharpened, is difficult to tread on' (Katha Upanishad 1.3.14)

अश्मन्वती रीयते सं रभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता सखाय:।

अत्रा जहाम ये असन्नशेवा: शिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान्।। (Rv. x.53.8)

Asmanvati riyate sam rabhadhvam uttisthata pra tarata sakhayah.

atra jahama ye asann asevah sivan vayam uttaremabhi vajan..

I will not incur loan and be in debt.

"I have reached this stage of life through the help and sympathy of many people. So I am indebted to them. My duty is to repay that debt in life. I will not enjoy the wealth earned by the labour of others. If I accept the hospitality of some one, I will express my gratitude and good wishes to him. If some one looks to me smilingly, I will offer my gratefulness to him."

"I will serve my parents with my body, mind and wealth and repay their debt. I will pay necessary taxes to the state treasury and will be free from the debt of the state. To the elders, I will be hospitable; to my colleagues I will be affectionate; to the juniors I will be protective and impart education."

The verse exhorts man not to enjoy delicious dishes by incurring loan. It is the ungrateful ones who do not confess the loans taken by them. Falsely they declare themselves as bankrupt and take shelter of the court.

'O Lord, may I neve have such evil idea in my mind during my life time' says the verse.

The person habitually incurring loan canot distinguish day and night due to the heavy burden on his head. He passes sleepless nights thinking only of the loans made by him. Even in the divine moment of the early dawn. the thought of loan keeps on tormenting him.

पर ऋणा सावीरध मत्कृतानि माहं राजन्यकृतेन भोजम्।

अव्युष्टा इत्रु भूयसीरुषास आ नो जीवन्वरुण तासु शाधि।। (Rv. 11.28.9)

Para rna savir adha matkrtani maham rajann anykrtena bhojam.

avyusta in nu bhuyasir usasa a no jivam varuna tasu sadhi..

To Be Continued...

पृष्ठ 1 का शेष

पठानकोट गुस्सा, दर्द ...

हो लेकिन सब जानते हैं आज पाकिस्तान की हालत सोमालिया जैसी होती जा रही है। आज पाकिस्तान में कट्टरपंथी मौलाना, आईएसआई और सेना काबिज है उसे देखकर लगता है कि वहां लोकतंत्र बस दिखावे की दुकान है अन्दर हिंसा, हत्या, आतंकवाद दानवता भरी पड़ी है? अब इन सब के बावजूद यदि भारत सरकार पाकिस्तान के साथ शांति के दरवाजे खोलना चाहती है तो उस मार्ग से श्वेत कबूतर की जगह आतंकवाद ही आएगा। क्योंकि उनके पास और कुछ है भी नहीं। अब इस अवस्था में यदि भारत फिर पाकिस्तान के साथ मेज पर बैठता है तो हम इसे कूटनीति की बजाय मूर्खता कह सकते हैं! क्योंकि चोट भी हम ही खाये और वार्ता के लिए भी हम ही आगे बढें, तो यह हमारी कमजोरी को दर्शाता है। हमें इजराइल से सीखना होगा कि यदि अपना धर्म, अपनी संस्कृति, अपनी अखंडता, प्रभुसत्ता बचाये रखनी है तो अपनी कमजोरी नहीं अपनी ताकत दिखानी होगी हमें सोचना होगा कि यह चुल्लू भर पानी क्यों बार-बार सागर को आँखें दिखा रहा। हमें अपनी आँखें लाल कर पाकिस्तान को समझाना होगा कि क्षमा गलती के लिए होती है, पाप के लिए नहीं। भारत सरकार को समझना होगा की आतंकवाद और पाकिस्तान एक इन्सान के दो नाम की तरह हैं क्योंकि मस्जिद, मदरसों में पलने वाले अस्सी फीसदी मजहबी मानसिकता से ग्रस्त लोगों के बिना तो पाकिस्तान का वजूद नहीं और बिना पाकिस्तान उन लोगों का वजूद नहीं तो फिर मित्रता का औचित्य क्या है? भारत के विरोध और उस विरोध से मिलने वाले चंदे से चल रहा आतंकी कारोबार ही पाकिस्तान का असली वजूद है असली संस्कृति है, नफरत के आधार पर खड़ा हुआ देश हमें कभी प्रेम के पुष्प नहीं सौंप सकता। अब भारत सरकार को समूचे विश्व के सामने पाकिस्तान के रहनुमाओं से साफ-साफ पूछ लेना चाहिए कि पाकिस्तान में चल रहे आतंकी कैम्पों को वो खुद खत्म करे ये जिम्मेदारी भी भारत ही निभाए? अब हम ये मानवीय त्रासदी और नहीं सह सकते।

आज हमारे सात जवान शहीद हुए जिनकी शहादत पर देश गर्व कर रहा है, किन्तु हम दुखी है और नम् आँखों से उन वीर जवानों के पार्थिव शरीर को नमन् करते हुए कहते हैं लहू देकर तिरंगे की बुलंदी को सवाँरा है। फरिस्ते हो तुम वतन के, तुम्हें प्रणाम हमारा है।। शत् शत् नमन।

-राजीव चौधरी

पृष्ठ 1 का शेष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि ...

अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं से सहयोग की अपील करते हुए बताया गया कि पुस्तक मेले में कुरान और बाईबिल प्रत्येक आगन्तुक को नि:शुल्क प्रदान की जाती है। हम सत्यार्थ प्रकाश को 10 रुपए में देने के लिए तभी समर्थ हो पाते हैं जब आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट इसमें 20 रुपए की छूट करके हमें 30 रुपए में देता है और हम आपसे एवं दानी महानुभावों से 20 रुपए प्रति सत्यार्थ प्रकाश सब्सिडी के रूप में सहयोग प्राप्त होता है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष हमने 25 हजार सत्यार्थ प्रकाश वितरित करने का लक्ष्य रखा है।

संस्कृतम्

विज्ञानं वरदानम्, अभिशापो वा

विज्ञानशस्त्रं द्विविधं प्रवर्तते, लाभाय लोकस्य च नाशनाय।

एकत्र लाभो जनता-समृद्धि:, अन्यत्र लोकस्य विनाशनं च।।

विज्ञानस्य लोक-हित-करणम्-वर्तमानयुगो विज्ञानस्य युगो मन्यते। विज्ञानं जीवनस्य प्रत्येकं पक्षं प्रभावयति-आर्थिकं सामाजिकं राष्ट्रीयम् अन्तर्राष्ट्रीयं च। अविष्काराणां तादृशी प्रगतिरस्ति या सर्वथा आश्चर्यं जनयति। विज्ञानं प्रतिदिनं नवीनानां यन्त्रादीनाम् आविष्कारेण मानवस्य सुखं सुविधां च वर्धचति। विविध-यन्त्राणां प्रयोगेण, इलेक्ट्रिक-सूक्ष्म-उपकरणानां च प्रयोगेण मानवस्य अहर्निशं सेवां करोति। मानवस्य याऽपि आवश्यकता वर्तते, तस्य पूर्ति करोति।

साम्प्रतं कम्प्यूटरस्य संगणकस्य वा अविष्कारो विज्ञानस्य सर्वोत्तमा उपलब्धि:। संगणक: सर्वासु क्रियासु अपेक्ष्यते। संगणकस्य भवनानां निर्माणे, रोगाणां परीक्षणे, वाणिज्य-व्यवसाये, शिक्षाक्षेत्रे, चिकित्साक्षेत्रादिषु विविधरूपेण विधीयते।

विघुत: आविष्कारोऽपि महत्वपूर्णोऽस्ति। चिकित्साक्षेत्रे विज्ञानेन अपूर्वा क्रान्ति: प्रवर्तिता। अधुना शल्यक्रियया अंग-प्रत्यारोपणम्, हृदय-प्रत्यारोपणम्, कृत्रिमांगरोपणं संभाव्यते।

संचारक्षेत्रेऽपि विज्ञानस्य चमत्कारो दृश्यते। दूरभाषेण, मोबाइल इत्यस्य च आविष्कारेण नूतना क्रान्ति: संजाता।

विज्ञानस्य दोषा:- नात्र कश्चन सन्देहो यद् विज्ञानेन सहस्रश: सुविधा: प्रदत्ता:, परं विज्ञानस्य दुरुपयोगेण विज्ञानम् अभिशापरूपेणापि वर्तते। विज्ञानस्य प्रमुखा: दोषा: सन्ति-1. सुख-सुविधा-प्रदानेन मानवोऽधुना कार्यविमुखो जात:। सर्वत्र प्रतिदिनं नैतिकताया। ह्रासो दृश्यते। 2. विकासकार्यार्थं यानि महायन्त्राणि निर्मितानि, तानि ध्वनि-प्रदूषणेन, वायु-प्रदूषणेन, जल-प्रदूषणेन च जानानां स्वास्थ्यं विनाशयन्ति। 3. विनाशकारि-शस्त्रास्त्रादीनां निर्माणेन, परमाणु-बम, हाईड्रोजन-बम-प्रभृतीनां निर्माणेन च मानव-जीवनं संकट-ग्रस्तं विहितम्।

विज्ञानस्य ये दोषा: सन्ति, ते निराकरणीया:। तदैव विज्ञानं वरदानं भविष्यति।

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1 के तत्त्वावधान में दिनांक 20 दिसम्बर 2015स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं अभिनन्दन समारोह स्वामी प्रणवानन्द जी गुरुकुल गौतम नगर की अध्यक्षता में आर्य समाज प्रांगण में सम्पन्न हुआ। समारोह का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुभाष आर्य महापौर, दक्षिण दिल्ली नगर निगम थे। श्री सुमन कान्त मुंजाल, श्री आनन्द चौहान, श्री के. सी. तनेजा (निगम पार्षद) समारोह के विशिष्ट अतिथि रहे। इस अवसर पर श्री बृजमोहन मुंजाल के स्मर्णीय पल और भावी 'वैदिक सेन्टर' योजना पर प्रजेन्टेशस दिखाई गयी।

-राजेन्द्र वर्मा, मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का वार्षिकोत्सव एवं प्रान्तीय सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का वार्षिकोत्सव 2016 एवं प्रान्तीय सम्मेलन दिनांक 30 एवं 31 जनवरी 2016 को महर्षि दयानन्द भवन दयानन्द विद्यालय परिसर डी.ए.वी. स्कूल रोड; बुधा. आसनसोल-1 में आयोजित होगा।

-सतीश चन्द्र मंडल, महामंत्री

स्त्री आर्य समाज बिड़ला लाइन्स के तत्वावधान में

मकर संक्रांति एवं लोहड़ी पर्व का आयोजन

स्त्री आर्य समाज बिड़ला लाइन्स कमला नगर दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक 13 जनवरी 2015 को मकर संक्रांति एवं लोहड़ी पर्व का आयोजन किया जाएगा। जिसमें यज्ञ ब्रह्मा **आचार्य कुंवरपाल शास्त्री** और मीनाक्षी कुमारी द्वारा मधुर आवाज में भजन सुनाए जाएंगे। **-आशा गर्ग, मंत्राणी**

महर्षि दयानन्द सरस्वती के बोधोत्सव के अवसर पर टंकारा चलें

आर्यावर्त केसरी अमरोहा के तत्वावधान में दिनांक 2 से 8 मार्च 2016 के मध्य यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। यह यात्रा दिनांक 2 मार्च प्रात- 7 बजे मुरादाबाद से आला हजरीत एक्सप्रेस से प्रस्थान करेगी। विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें- डॉ. अशोक कुमार आर्य, संयोजक मो. 09412139333

आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में

माघ मेला-2016 का आयोजन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग, दिनांक 24 जनवरी से 22 फरवरी 2016 तक माघ मेला का आयोजन कर रहा है। ज्ञात हो महर्षि दयानन्द जी ने प्रयाग में अपना डेरा जमाया था और मात्र कौपीन धारण करके कई माह नागवाशुकि मन्दिर में रहते हुए वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार किया था। इसी प्रयाग नगरी में वैदिक धर्म की विभिन्न शाखाओं के साधु-सन्त/शंकराचार्य अपने अपने दार्शनिक विचारों का प्रचार करेंगे। **-अजेय कुमार मेहरोत्रा**

आर्य समाज एवं आर्य वीरदल के तत्वावधान में

आर्य वीरदल सम्मेलन

आर्य समाज एवं आर्य वीरदल त्री नगर, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 2 फरवरी 2016 आर्य वीरदल सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। मुख्य अतिथि श्री बेगराज खटाना जी होंगे। सम्मेलन श्री जगवीर आर्य (संचालक आर्य वीरदल दिल्ली प्रदेश) की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा। **संयोजक :** श्री बृजेश आर्य, मो. 09999715070

जैविक खेती से उत्पन्न गेहूं व चावल प्राप्त करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती कृषि और गो करुणानिधि की प्रेरणा से जैविक खेती से उत्पन्न गेहूं व चावल मिलता है। स्वस्थ रहने के लिए जैविक खेती से उत्पन्न अन्न खाना चाहिए। हर वर्ष व्यक्ति के शरीर में डेढ़ किलोग्राम डी. ए.पी. और यूरिया जमा हो जाता है जोकि 103 बीमारियों को पैदा करता है इसलिए जैविक खेती से उत्पन्न अन्न ही खाएं। **-दीपक आर्य, करनाल**
मो. 09466518540

नगर आर्य समाज शाहदरा का 61 वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नगर आर्य समाज शाहदरा का 61वां वार्षिकोत्सव दिनांक 12 व 13 दिसम्बर 2015 को युवाओं द्वारा धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वेद प्रचार क्षेत्र में युवाओं ने अपने कार्यक्रमों द्वारा आगंतुकों का मनमोह लिया।

-रणवीर सिंह आर्य

गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव दिनांक 13 व 14 जनवरी 2016 को वेदों के मूर्धन्य विद्वान् स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती (पं. बुद्धदेव विद्यालंकार) की पुण्यतिथि के अवसर पर अखिल भारतीय वैदिक शोध संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। 10 जनवरी 2016 से प्रारम्भ यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहूति, ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार तथा वेदारम्भ 14 जन. को होगा।

-डॉ. वाचस्पति, मंत्री

फरीदकोट में विश्व शान्ति महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर फरीदकोट के तत्वावधान में दिनांक 4 से 6 दिसम्बर 2015 के मध्य विश्व शान्ति महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य चन्द्र देव शास्त्री थे। आचार्य चन्द्र देव शास्त्री के ओजस्वी उद्बोधन एवं बहन अल्का आर्या जी ने अपने भजनों व उपदेशों के द्वारा जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

-सतीश कुमार आर्य, मंत्री

बोध कथा वे कैसे चरित्रवान् थे?

इन्हीं महाशय देवकृष्णजी को राज्य की ओर से एक शीश महल क्रय करने के लिए बम्बई भेजा गया। वहां उन्हेंदस सहस्र रुपया कमीशन (दलाली) के रूप में भेंट किया गया। आपने लौटकर यह राशि महाराज नाहरसिंह के सामने रखी दी। उनकी इस ईमानदारी और सत्यनिष्ठा से सब पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्हें लोग चलता-फिरता आर्य समाजी समझते थे। उस युग में दस सहस्र की राशि कितनी बड़ी होती थी। इसका हमारे पाठक सहज रीति से अनुमान लगा सकते हैं।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

शोक समाचार संगठन मंत्री राजनाथ गोयल को मातृशोक

आर्य समाज अमरोहा के संगठन मंत्री श्री राजनाथ गोयल जी की पूज्य माता श्रीमती प्रमिला गोयल जी का 80 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। माता जी ने अमरोहा आर्य समाज के विकास में अहम भूमिका निभाई।

आर्य केन्द्रीय सभा (दि.रा.) के उपप्रधान राजेन्द्र दुर्गाजी की बहन श्रीमती स्वर्णलता नन्दवानी दिवंगत

आर्य केन्द्रीय सभा (दि.रा.) के उपप्रधान श्री राजेन्द्र दुर्गाजी की बहन श्रीमती स्वर्णलता नन्दवानी धर्मपत्नी श्री गोपी चन्द नन्दवानी सदस्य आर्य सामज प्रीतविहार का दिनांक 7 दिसम्बर 2015 को आकस्मिक निधन हो गया वे 71 वर्ष की थीं। बहन स्वर्ण लता अपने पीछे दो पुत्र व एक पुत्री का भरा पूरा परिवार छोड़ गयी हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

गौ-रक्षा सत्याग्रह का पुनः शंखनाद

भारत में गौ हत्या पूर्ण प्रतिबंध पर आपातकालीन सत्याग्रह विश्व की सबसे बड़ी गौ क्रांति 1966 की 50वीं वर्षगांठ पर सर्वदलीय गौ रक्षा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठा. जयपाल सिंह ''नयाल सनातनीजी'' संसद के शीतकालीन सत्र में सम्पूर्ण गौ रक्षा विधेयक पर चर्चा की मांग को लेकर नई दिल्ली के जंतर-मंतर पर सत्याग्रह पर बैठे हैं। यह सत्याग्रह संसद के शीतकालीन सत्र तक चलेगा। सर्वदलीय गौ रक्षा मंच का संघर्ष लोकसभा में गौ रक्षा केन्द्रीय कानून पास कराने तक जारी रहेगा। सभी गौ रक्षा संगठनों गौ भक्त तथा सभी परम पूज्यनीय संतों से आग्रह है कि सत्याग्रह में सहयोग करें व समर्थन दे।

-संरक्षक, मो. 09643220362

साप्ताहिक आर्य सन्देश

4 जनवरी 2016 से 10 जनवरी, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 7 जनवरी 2016/ 8 जनवरी, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 6 जनवरी, 2016

स्वास्थ्य चर्चा

दाद चम्बल

1. नीम के पत्ते छाया में सुखा पीसकर 5 ग्राम को 50 ग्राम दही में घोट कर दाद चम्बल पर लगाएं।
2. नींबू के रस में नौशादर पीसा मिलाकर आठ दस दिन लगाएं।
3. टीचर आयोडिन या मिट्टी का तेल प्रात: सायं लगाएं।
4. शुद्ध गंधक, सुहागा भूना, सफेद राल, अजवायन 10-10 ग्राम नौसादर, मुर्दाशंख 5-5 ग्राम अर्क कपूर तीन ग्राम पीस कर नींबू के रस में मिलाकर लगाने से नया पुराना दाद ठीक हो जाता है।
5. सुहागा भूना, शुद्ध गुगल,, गंधक अमलासार, अजवायन 10-10 ग्राम नौसादर, मुर्दाशंख 5 ग्राम पीसकर नींबू रस में घिस कर लगाएं हर प्रकार का छोटा बड़ा दाद ठीक चम्बल हो जाता है। 10-15 दिन लगातार प्रयोग करें।
6. मैंसिल या सुहागे को पानी में पीसकर लगाएं।
7. बीजनौल सिकरके में पीसकर लगाएं।
8. तुलसी या गेंदे के पत्ते पीस कर दाद पर लागाएं।
9. नींबू का रस 50 ग्राम में सुहागा 2 ग्राम पिसा मिलाकर दाद खुला कर लगाएं।
10. बीज पंवाड 20 ग्राम को कूट पीस कर दही 125 ग्राम में मिलाकर तीन दिन धरे रखें फिर दाद खुजला कर लेप लगाएं।
11. सारे शरीर पर दाद हो तो गेंदें को पत्ते का रस निकाल उसमें नगद बावरी 10 ग्राम काल मिर्च सात पीसकर रात को रस में भिगोऐं प्रात: पानी निथार कर 20-25 दिन लागातार पीयें।

प्रतिष्ठा में,

महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक में पारित प्रस्ताव के अनुसार महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन कार्य आरंभ हो गया है। आप सभी से निवेदन है कि यदि आप के पास महाशय धर्मपाल से संबंधित कोई लेख/सूचना/स्मृति चित्र/कविता/संस्मरण/पत्र व्यवहार या आपके यहां उनके नाम से लगा कोई शिलालेख आदि हों तो कृपया 'महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ समिति' के नाम-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर तत्काल भिजवाने की कृपया करें जिससे उन्हें ग्रंथ में स्थान दिया जा सके। आप अपनी प्रकाशन सामग्री समिति को **aryasabha@yahoo.com** ईमेल भी कर सकते हैं। **-सचिव, महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ समिति**

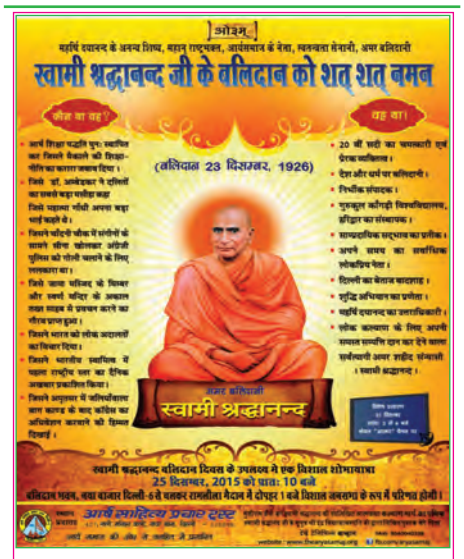

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों में पूर्ण पृष्ठीय विज्ञापन प्रकाशन के लिए एमडीएच एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट का हार्दिक धन्यवाद

आर्य समाज संगम बिहार का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज संगम विहार एवं दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 27 दिसम्बर 2015 स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं वार्षिकोत्सव का आयोजन श्री राम किशन अग्रवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्री रमेश बिधूड़ी (सांसद दक्षिण दिल्ली) थे।

आर्य संदेश इंटरनेट पर पढ़े :

www.thearyasamaj.org/article

फेसबुक पर हमसे जुड़ें :

margdrashan@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह